जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 11 अंक 105
दिसंबर, 2024
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

दिसंबर 2024 **वर्ष-11 • अंक-105**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

सिंहावलोकन

6. गायतोंडे को बचपन से ही पेंटिग और रंगो का शौक था : **कुसुमलता सिंह**

लेख

10. मध्यप्रदेश वनवासी समुदाय में साज-सज्जा : **प्रमोद भार्गव**
14. त्रिपुरा की जमातिया जनजाति : **वीरेन्द्र परमार**
18. संताली भाषा पर भारतीय भाषाओं का प्रभाव : **अशोक सिंह**
20. बुंदेलखंड का विलुप्तप्राय खेल गुट्टा या चपेटा : **शिवम शर्मा**

कहानी

23. मुर्गा लड़ाई : **रजनी शर्मा 'बस्तरिया'**
29. एक कहानी अलग-सी : **सुशांत सुप्रिय**
32. द्रोपदी नहीं बनूंगी : **संगीता गाँधी**
34. दीवानापन (फ्रांसीसी) : **मोपासां**

कविता/चुने हुए शेर/ग़ज़ल

37. गोलेन्द्र पटेल 37. चारूमित्रा 38. उषा शर्मा 39. मीनाक्षी पंवार मीशांत 39. डॉ. किशन तिवारी 40. शिवनारायण

धरोहर

41. साहित्य का तात्पर्य : **रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

रिर्पोताज

43. निमाड़ उत्सव : **डॉ. विभा ठाकुर**

लघुकथा

33. सपने सभी सुहाने : **विनोद भट्ट**

श्रद्धांजलि (शारदा सिन्हा)

46. पलटनिया बनी अइह, पिया! : **अश्विनी कुमार आलोक**
17. **कहावतें**
22. **क्या है ककसाड़?**
31. **यादें**
49. **साहित्यिक समाचार**

आवरण कलाकृति - द्वारिका परास्ते
(गोंड कलाकार) - भोपाल (म.प्र.)
मो. 97547-81409
प्रकृति के चित्रों में रंगों का चयन और उसका प्रयोग इनकी विशेषता है।

संपादकीय

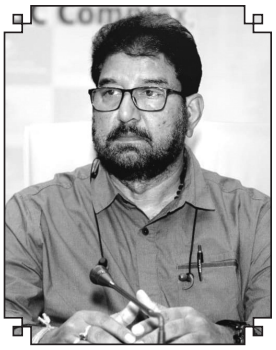

बढ़ती सर्दी का उपहार देकर उलटे पाँव विदा ले रहे साल का अंतिम अंक आपके हाथों में है। ककसाड़ की पूरी टीम ने पूरी कोशिश की है कि जाते साल का यह अंक हमारे सुधी पाठकों के लिए एक यादगार और सहेजनीय अंक बन जाए।

शीत ऋतु जहाँ अमीरों के लिए आराम,आमोद प्रमोद, पिकनिक और विलासिता का मौसम है, वहीं गरीबों के लिए यह जीने-मरने का संघर्ष, साक्षात नरक बन जाती है। प्रेमचंद की 'पूस की रात' आज भी देश के गाँवों के छोटे मझौले किसानों के लिए कहानी से बढ़कर रोज झेलने वाली हकीकत है।

प्राचीन दार्शनिक अरस्तू ने कहा था, 'Injustice arises when equals are treated unequally.' यह असमानता सर्दी के मौसम में साफ झलकती है, जब अमीर ऊनी कपड़ों और गर्म हीटरों से घिरे होते हैं, जबकि गरीब के बच्चे ठंड से ठिठुरते हैं।

हरिवंश राय बच्चन शीत ऋतु की प्रशंसा में कहते हैं, 'धुंध की चादर ओढ़े ये सुबहें, हैं उम्मीदों के मौसम के नगीने।' यह विडंबना ही है कि समाज के अंतिम पायदान के सबसे बड़े तबके की मुट्ठी में उम्मीदों के नगीनों की बात तो छोड़िए एक अदद जुगनू भी नहीं है। उम्मीद के नाम पर कचरा जलाकर तापने के अलावा कोई विकल्प हमने नहीं छोड़ा है।

दूसरी ओर, भारतीय दार्शनिक स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि 'एकमात्र ईश्वर जिसका अस्तित्व है, एकमात्र ईश्वर जिस पर मैं विश्वास करता हूँ, वो 'नारायण' दीन-हीन व दुखी लोगों में निवास करता है, पर इस 'नारायण' के लिए कोई गर्म कोट या रजाई नहीं है। सर्दी का यह विभाजन हमारी सामाजिक संरचना की क्रूर असंवेदनशीलता को उजागर करता है। क्या हम अपने ही समाज में गरीबी के खिलाफ कुछ गर्मी नहीं जगा सकते? सर्दी अमीरों के लिए एक 'फेस्टिव सीजन' है और गरीबों के लिए 'लिविंग हैल।'

यह असमानता आखिर कब तक चलती रहेगी? इस यक्ष प्रश्न का जवाब यदि हमें ढूंढना है तो हमें वापस अपनी जड़ों की ओर यानि कि अपने बचे खुचे आदिम पुरखों जनजाति समुदायों की ओर शिष्य भाव से जाना होगा।

शहरी सभ्यता से इतर, बस्तर में शीत ऋतु के आगमन पर प्रकृति अनूठी छटा बिखेरती है। हल्की ठंडी हवा, कोहरे में लिपटे फुसफुसाते जंगल, और मंद धूप-छाँव की आँखमिचोली के बीच बस्तर की धरती एक जीवंत कविता-सी प्रतीत होती है।

बस्तर, जो कि मानवीय सभ्यता के विकास के साथ ही गोंड, माड़िया, हल्बा, भतरा,दोरला, गांड़ा, परजा जैसे जनजातीय समुदायों का आदिम रहवास रहा है। यह समूचा अँचल इस मौसम में जीवंत उत्सवों और परंपराओं से भर उठता है। इन समुदायों का दिसंबर महीने में प्रकृति के साथ एक गहरा जुड़ाव होता है। रॉबर्ट फ्रॉस्ट ने कहा है कि 'In the woods, we return to reason and faith.' इस भाव से यह महीना हमारी जड़ों और परंपराओं की ओर लौटने का अवसर देता है। खेतों में कटाई के बाद आने वाला यह समय इनके त्यौहारों, मेला, मड़ईं और सामूहिक आनंद का प्रतीक है।

इन त्यौहारों में पेड़, पौधों, नदी, नालों, पहाड़ों तथा धरती को कुल मिलाकर समग्र प्रकृति को धन्यवाद दिया जाता है और सामूहिक नृत्य, संगीत और ककसाड़ जैसे परंपरागत अनुष्ठान किए जाते हैं। इन समुदायों के सभी